दक्षता आधारित कार्य-पत्रक

विषय: हिन्दी कक्षा : नवीं

पाठ/प्रकरण का नाम : वाख -ललद्यद	**समयावधि :** 40 मिनट
विद्यार्थी का नाम : ----------	**पूर्णांक :**
अनुक्रमांक (रोल नं.) :	**दिनांक :** ...../...../ .....

	(काव्यांश आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न)	
	पठित काव्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए	**5**
	थल-थल में बसता है शिव ही भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमां | ज्ञानी है तो स्वयं को जान , यही है साहिब से पहचान	
1.	उपर्युक्त पंक्तियों में निहित काव्य -शैली कौनसी है ?	**1**
	(क)दोहा (ख)वाख	
	(ग)चौपाई (घ)साखी	
2.	थल-थल में बसता है शिव ही | प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में कौनसा अलंकार निहित है ?	**1**
	(क)उपमा (ख)रूपक	
	(ग)उत्प्रेक्षा (घ)पुनरुक्तिप्रकाश	
3.	भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमां | हिन्दू – मुसलमां में कौनसा समास निहित है |	**1**
	(क) तत्पुरुष समास (ख)द्वंद्व समास	
	(ग)कर्मधारय समास (घ)द्विगु समास	
4.	कवयित्री के अनुसार हमारी ईश्वर से कब पहचान होगी ?	**1**
	(क) जब हम ईश्वर की पूजा करेंगे | (ख)जब हम व्रत -उपवास करेंगे |	
	(ग)जब हम स्वयं को जानेंगे | (घ) जब हम तीर्थ -यात्रा करेंगे |	
5.	थल-थल में बसता है शिव ही भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमां | उपर्युक्त पंक्तियों में कवयित्री ने समाज को क्या संदेश दिया है ?	**1**
	(क) ईश्वर की सर्वव्यापकता |	
	(ख) धार्मिक सद्भाव |	
	(ग) धार्मिक भेदभाव	
	(घ) ईश्वर की सर्वव्यापकता व धार्मिक सद्भाव |	
	(पाठ आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न)	

eGyanarchive

6.	रस्सी कच्चे धागे की ,खींच रही मैं नाव | प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से मनुष्य जीवन के किस पक्ष की ओर संकेत कवयित्री करती है ?	1
	(क)जीवन की सुंदरता | (ख)जीवन की सार्थकता |	
	(ग)जीवन की नश्वरता | (घ)जीवन की	
7.	प्रस्तुत काव्य की कवयित्री ,काव्य शैली का नाम है -	1
	(क) महादेवी वर्मा ,दोहे |	
	(ख) मीरा ,पद |	
	(ग) ललद्यद,वाख |	
	(घ) ललद्यद ,चौपाई |	
8.	'बंद द्वार की साँकल' खुलने से क्या तात्पर्य है ?	1
	(क)प्रज्ञा चक्षुओं का खुलना |	
	(ख)दरवाजा खुलना |	
	(ग)परमात्मा के पास जाने का रास्ता खुल जाना |	
	(घ)संसार से विदा होना	
9.	वाख किसे कहते है ?	
	(क)एक पक्षी का नाम |	
	(ख)वाणी को वाख कहते है |	
	(ग)कश्मीर में कविता को वाख कहते है |	
	(घ)वाख ईश्वर भक्त को कहते है |	
10.	जेब टटोलने का प्रतीकार्थ क्या है ?	
	(क)आत्मावलोकन करना |	
	(ख)खर्च का हिसाब लगाना |	
	(ग)माँझी को उसका किराया देना |	
	(घ)किसी का ऋणी न रहना |	
	(वर्णनात्मक प्रश्न)	
11.	प्रस्तुत वाख में नाव किसका प्रतीक है और कवयित्री उसे कैसे खींच रही है ?	2
	उत्तर:- ---------- ---------- ---------- ----------	

egyanarchive

12.	'न खाकर बनेगा अहंकारी |' कवयित्री ने ऐसा क्यों कहा है ?	2
	उत्तर:- ---------- ----------	
13.	कवयित्री ने अपने व्यर्थ हो रहे प्रयासों की तुलना किससे की है और क्यों ?	2
	उत्तर:- ---------- ----------	
14.	'सुषुम -सेतु पर खड़ी थी ,बीत गया दिन आह !'इससे कवयित्री का क्या अभिप्राय है ?	2
	उत्तर:- ---------- ----------	
15.	आपसी भेदभाव से हमारे देश और समाज को क्या हानिहो रही है ?आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए अपने सुझाव दीजिए		2
	उत्तर:- ---------- ----------	

egyanarchive

उत्तरमाला

प्रश्न	दक्षता/उद्देश्य	उत्तर	
		(काव्यांश आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न)	
1.	ज्ञान	उत्तर:- (ख)वाख	1
2.	मूल्यांकन	उत्तर:- (घ)पुनरुक्तिप्रकाश	1
3.	मूल्यांकन	उत्तर:- (ख)द्वंद्व समास	1
4.	विश्लेषण	उत्तर:- (ग)जब हम स्वयं को जानेंगे |	1
5.	व्यवहार-कौशल	उत्तर:- (घ) ईश्वर की सर्वव्यापकता व धार्मिक सद्भाव |	1
		(पाठ आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न)	
6.	समझ	उत्तर:- (ग)जीवन की नश्वरता |	1
7.	स्मरण	उत्तर:- (ग) ललद्यद,वाख |	1
8.	ज्ञान	उत्तर:- (क)प्रज्ञा चक्षुओं का खुलना |	1
9.	स्मरण	उत्तर:- (ख)वाणी को वाख कहते है |	1
10.	विश्लेषण	उत्तर:- (क)आत्मावलोकन करना |	1
		(वर्णनात्मक प्रश्न)	
11.	ज्ञान	उत्तर:- नाव इस नश्वर शरीर का प्रतीक है| कवयित्री उसे साँसों की डोर रूपी रस्सी के सहारे खींच रही है |	2
12.	मूल्यांकन	उत्तर:- न खाकर बनेगा अहंकारी -कवयित्री ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि भोग -विलास से दूरी बनाते -बनाते लोग इतनी दूरी बना लेते हैं कि वे वैराग्य धारण कर लेते हैं |उन्हें अपनी इन्द्रियों को वश में करने के कारण घमंड हो जाता है |वे स्वयं को सबसे बड़ा तपस्वी मानने लगते हैं |	2
13.	समझ	उत्तर:-कवयित्री ने अपने व्यर्थ हो रहे प्रयासों की तुलना कच्चे सकोरों से की है | मिट्टी के इन कच्चे सकोरों में जल रखने से जल रिसकरबह जाता है और सकोरा खाली रहता है ,उसी प्रकार कवयित्री के विफल हो रहे हैं |	2
14.	विश्लेषण	उत्तर:-सुषुम सेतु का अर्थ सुषुम्ना नाड़ी रूपी पुल |कवयित्री भक्ति का मार्ग छोड़कर हठयोग के मार्ग पर चल पड़ी थी ,जिसके कारण उसका पूरा जीवन बीत गया पर किसी सद्कर्म का लाभ नहीं मिला |	2
15.	सृजनात्मक	उत्तर:-हमारे समाज में जाति धर्म, भाषा, संप्रदाय आदि के नाम पर भेद-भाव किया जाता है। इससे समाज और देश को बहुत हानि हो रही है।इससे समाज बँट कर सौहार्द और भाई-चारा खो बैठा है।त्योहारो के समय इनकी कट्टरता के कारण किसी न किसी अनहोनी की आशंका बनी रहती है।इससे कानून व्यवस्था की समस्या उठ खड़ी होती है तथा विकास पर किया जाने वाला खर्च अकारण नष्ट होता है।आपसी भेद भाव मिटाने के लिए लोगो को सहन शील बनना होगा, सर्व धर्म समभाव की भावना लानी होगी तथा कट्टरता त्यागकर धार्मिक सौहार्द का वातावरण बनाना होगा।	2